८१० बंबई, आसोज सुदी ८, रवि, १९५३

ॐ

पारमार्थिक हेतुविशेषसे पत्रादि लिखना नहीं बन पाता।

जो अनित्य है, जो असार है और जो अशरणरूप है वह इस जीवको प्रीतिका कारण क्यों होता है यह बात रात-दिन विचार करने योग्य है।

लोकदृष्टि और ज्ञानीकी दृष्टिमें पश्चिम पूर्व जितना अंतर है। ज्ञानीकी दृष्टि प्रथम तो निरालंबन है, रुचि उत्पन्न नहीं करती, जीवकी प्रकृतिसे मेल नहीं खाती, जिससे जीव उस दृष्टिमें रुचिमान नहीं होता। परंतु जिन जीवोंने परिषह सहन करके कुछ समय तक उस दृष्टिका आराधन किया है, वे सर्व दुःखके क्षयरूप निर्वाणको प्राप्त हुए हैं, उसके उपायको प्राप्त हुए हैं।

जीवको प्रमादमें अनादिसे रति है, परंतु उसमें रति करने योग्य कुछ दिखायी नहीं देता। ॐ

८१३ बंबई, आसोज वदी ७, १९५३

ऊपरकी भूमिकाओंमें भी अवकाश मिलनेपर अनादि वासनाका संक्रमण हो आता है, और आत्माको वारंवार आकुल-व्याकुल कर देता है। वारंवार यों हुआ करता है कि अब ऊपरकी भूमिकाकी प्राप्ति होना दुर्लभ ही है, और वर्तमान भूमिकामें स्थिति भी पुनः होना दुर्लभ है। ऐसे असंख्य अंतराय-परिणाम ऊपरकी भूमिकामें भी होते हैं, तो फिर शुभेच्छादि भूमिकामें वैसा हो, यह कुछ आश्चर्यकारक नहीं है। वैसे अंतरायसे खिन्न न होते हुए आत्मार्थी जीव पुरुषार्थदृष्टि रखें, शूरवीरता रखे, हितकारी द्रव्य, क्षेत्र आदि योगका अनुसंधान करे, सत्शास्त्रका विशेष परिचय रखकर, वारंवार हठ करके भी मनको सद्विचारमें लगाये और मनके दुरात्म्यसे आकुल-व्याकुल न होते हुए धैर्यसे सद्विचारपथपर जानेका उद्यम करते हुए जय पाकर ऊपरकी भूमिकाको प्राप्त करता है और अविक्षिप्तता प्राप्त करता है। 'योगदृष्टिसमुच्चय' वारंवार अनुप्रेक्षा करने योग्य है।

८१४ बंबई, आसोज वदी १४, रवि, १९५३

ॐ

श्री हरिभद्राचार्यने 'योगदृष्टिसमुच्चय' ग्रंथ संस्कृतमें रचा है। 'योगबिंदु' नामक योगका दूसरा ग्रंथ भी उन्होंने रचा है। हेमचंद्राचार्यने 'योगशास्त्र' नामक ग्रंथ रचा है। श्री हरिभद्रकृत 'योगदृष्टि-समुच्चय'की पद्धतिसे गुर्जरभाषामें श्री यशोविजयजीने स्वाध्यायकी रचना की है। शुभेच्छासे लेकर निर्वाणपर्यंतकी भूमिकाओंमें मुमुक्षुजीवको वारंवार श्रवण करने योग्य, विचार करने योग्य और स्थिति करने योग्य आशयसे बोध-तारतम्य तथा चारित्र-स्वभावका तारतम्य उस ग्रंथमें प्रकाशित किया है। यमसे लेकर समाधिपर्यंत अष्टांगयोग दो प्रकारके हैं–एक प्राणादि निरोधरूप और दूसरा आत्मस्वभावपरिणामरूप। 'योगदृष्टिसमुच्चय'में आत्मस्वभावपरिणामरूप योगका मुख्य विषय है। वारंवार वह विचार करने योग्य है।

श्री धुरीभाई आदि मुमुक्षुओंको यथायोग्य प्राप्त हो।